इकाई 3 राजनीतिक सिद्धांत की आवश्यकता

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 परिचय

3.2 राजनीतिक सिद्धांत व अन्य अन्तर्सम्बद्ध शब्द

3.3 राजनीतिक सिद्धांत के अनुप्रयोग

- 3.3.1 राजनीतिक चिंतन के इतिहास स्वरूप
- 3.3.2 विश्लेषण की तकनीक स्वरूप
- 3.3.3 संकल्पनात्मक स्पष्टीकरण स्वरूप
- 3.3.4 औपचारिक आदर्श-निर्माण स्वरूप
- 3.3.5 सैद्धांतिक राजनीति-विज्ञान स्वरूप

3.4 मुख्य सैद्धान्तिक संकल्पनाओं का महत्त्व

3.5 क्या राजनीतिक सिद्धांत अपना अस्तित्व खो चुका है?

3.6 राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान

3.7 ताज़ा घटनाक्रम

3.8 सारांश

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

यह इकाई स्वयं को राजनीति सिद्धांत हेतु आवश्यकता से जोड़ती है। इसको पढ़ने के बाद आप इस लायक होंगे कि :

- राजनीतिक सिद्धांत व अन्य इसी प्रकार के शब्दों में भेद कर सकें;
- राजनीतिक सिद्धांत के विभिन्न अनुप्रयोगों पर चर्चा करें, नामतः राजनीतिक चिन्तन के इतिहास स्वरूप, विश्लेषण की एक तकनीक के रूप में, आदि और;
- जाँच कर सकें कि राजनीतिक सिद्धांत ने कहीं अपना अस्तित्व ही तो नहीं खो दिया।

3.1 परिचय

राजनीतिक सिद्धांत राजनीति-विज्ञान में एक मुख्य मर्म क्षेत्र है। ऐसा अभी हाल ही में हुआ है कि यह एक शैक्षिक चिंतन के रूप में उभरा है। पहले वे लोग जो इस उद्यम में लगे थे, स्वयं को दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक के रूप में प्रस्तुत करते थे। प्राचीन यूनान से लेकर आज तक राजनीतिक सिद्धांत का इतिहास राजनीति-विज्ञान के बुनियादी और शाश्वत् विचारों से भरा पड़ा रहा है। राजनीति-विज्ञान शब्द का प्रथम आधुनिक प्रयोग चार्ल्स-लूई द सैकॉन्दा मौन्तस्क्यू (1689-1755), ऐडम स्मिथ (1723-90), ऐडम फर्ग्यूसन (1723-1816) तथा डैविड ह्यूम (1711-76) की पुस्तकों में हुआ, जहाँ इसका मतलब था 'कानून-निर्माता का विज्ञान'।

उस बौद्धिक परम्परा को निर्दिष्ट करने में व्यवहार करने के लिए 'राजनीतिक सिद्धांत' ही सर्वाधिक उपयुक्त शब्द है, जो तत्काल व्यावहारिक मामलों के क्षेत्र को लाँघने और मनुष्य के सामाजिक अस्तित्व को एक आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य से 'देखे जाने' की संभावना को दृढ़ करता है। राजनीतिक सिद्धांत संपूर्ण अर्थ में राजनीतिक-विज्ञान था, और सिद्धांत के बग़ैर कोई विज्ञान नहीं हो सकता। ठीक वैसे कि जब हम सिद्धांत के बारे में बात सिद्धांतीकरण के किसी कार्यकलाप के रूप में ही करें, अतः राजनीतिक सिद्धांत को वैध रूप से और सटीक रूप से राजनीतिक-विज्ञान के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

3.2 राजनीतिक सिद्धांत व अन्य अन्तर्सम्बद्ध शब्द

राजनीतिक सिद्धांत और अन्य शब्दों जैसे राजनीतिक-विज्ञान, राजनीतिक-विज्ञान व राजनीतिक-चिंतन, आदि के बीच भेद किया जा सकता है, हालाँकि अनेक विद्वान इनको अदल-बदल कर प्रयोग करते हैं। राजनीतिक सिद्धांत और राजनीति-विज्ञान के बीच भेद आधुनिक विज्ञान द्वारा पनपी बौद्धिक मान्यताओं में आम बदलाव की वजह से पैदा हुआ है। राजनीतिक-विज्ञान ने राजनीति और राजनीतिक व्यवहार के विषय में सत्याभासी निष्कर्ष और नियम देने का प्रयास किया है। राजनीतिक-विज्ञान राजनीतिक दृश्यघटना, प्रक्रियाओं एवं संस्थाओं पर और वास्तविक राजनीतिक व्यवहार पर उसे दर्शनशास्त्रीय अथवा नीतिशास्त्रीय निकष (criterion) के अधीन कर प्रकाश डालता है। वह सर्वोत्तम राजनीतिक व्यवस्था संबंधी प्रश्न को संज्ञान (consider) लेता है, जो कि एक वृहत्तर और एक अधिक बुनियादी प्रश्न का हिस्सा है, नामतः उस जीवन का आदर्श रूप जो कि मनुष्य को एक वृहत्तर समुदाय में रहकर जीना चाहिए। तत्काल और स्थानीय प्रश्नों का जवाब देने की प्रक्रिया में यह चिरस्थायी मुद्दे को उठाता है; जो कि इस बात का कारण है कि क्यों सैद्धांतिक मूल ग्रंथों का अध्ययन इस नियम पद्धति का एक महत्त्वपूर्ण घटक बनता है। राजनीति-विज्ञान में किसी भी चिरसम्मत उत्कृष्ट साहित्य में महान् साहित्य कृतियों के अनिवार्य तत्त्व होते हैं, जो कि अपने स्थानीय परिवेश में रहकर भी जीवन व समाज की चिरस्थायी समस्याओं को निबटाता है। इसमें, शाश्वत ज्ञान का सार-तत्त्व होता है और वह किसी एक संस्कृति, स्थान, जन-समाज अथवा समय की नहीं, बल्कि समग्र मानव जाति की धरोहर होता है।

विशिष्ट राजनीतिक सिद्धांतों को किसी घटना के सही अथवा अन्तिम अवबोध (understanding) के रूप में नहीं लिया जा सकता है। किसी घटना का अर्थ हमेशा नए दृष्टिकोणों से भावी व्याख्याओं हेतु खुला रहता है, हर एक सिद्धांत राजनीतिक जीवन में एक विशिष्ट दृष्टिकोण अथवा महत्त्व की दृष्टि से व्याख्या और विश्लेषण करता है। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक सिद्धांत अपने प्रयत्न में आलोचनात्मक होता है, क्योंकि वह ऐसी राजनीति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है जो साधारण लोगों की राजनीति से ऊपर होता है। राजनीतिक सिद्धांत और राजनीति-विज्ञान के बीच कोई तनाव नहीं होता, क्योंकि वे अपनी सीमाओं व क्षेत्राधिकार के लिहाज से ही भिन्न होते हैं, अपने उद्देश्य में नहीं। राजनीतिक सिद्धांत विश्लेषण, वर्णन, स्पष्टीकरण एवं समालोचना के उद्देश्य से विचार, धारणाएँ एवं सिद्धांत प्रस्तुत करता है, जो कि बदले में राजनीतिक-विज्ञान में शामिल कर लिए जाते हैं।

राजनीतिक-दर्शन सामान्य प्रश्नों के उत्तर प्रदान करता है, जैसे – न्याय क्या है, अधिकार-संबंधी संकल्पनाएँ, 'जो है' और 'जो होना चाहिए' के बीच भिन्नता, तथा राजनीति के वृहत्तर मुद्दे। राजनीतिक-दर्शन मानवीय राजनीतिक सिद्धांत का हिस्सा है, क्योंकि वह

संकल्पनाओं के बीच अंतर्संबंधों को स्थापित करने का प्रयास करता है। यह कहना शायद ठीक होगा कि हर एक राजनीतिक-दार्शनिक एक सिद्धांती होता है, हालाँकि हर राजनीतिक सिद्धांती कोई राजनीतिक-दार्शनिक नहीं होता है। राजनीतिक-दर्शन एक जटिल कार्यकलाप है, जो कि सबसे अच्छी तरह उन कई तरीकों का विश्लेषण करके समझा जाता है जिनको जाने-माने विद्धानों ने अपनाया होता है। किसी एक दार्शनिक और किसी एक ऐतिहासिक काल के बारे में नहीं कहा जा सकता कि उसने इसे निष्कर्ष रूप में परिभाषित किया है– चित्रकला से हम जो कुछ भी समझते हों उससे कहीं अधिक वह समझता है जो कि उसका चित्रकार है अथवा जिसने उस चित्रकला स्कूल का अभ्यास किया हो।

राजनीतिक चिंतन समग्र समुदाय का ही चिंतन है जिसमें उसके सुस्पष्ट भागों जैसे पेशेवर राजनीतिज्ञों, राजनीतिक टीकाकारों, समाज सुधारकों व किसी समुदाय के साधारण व्यक्तियों के लेख और भाषण होते हैं। यह चिन्तन राजनीतिक संधियों, पांडित्यपूर्ण लेखों, भाषणों, सरकारी नीतियों व निर्णयों, तथा पद्य व गद्य के रूप में भी हो सकता है जो लोगों के संताप हर ले। चिन्तन समयबद्ध होता है, उदाहरण के लिए, बीसवीं सदी का इतिहास। संक्षेप में, राजनीतिक चिंतन में वे सिद्धांत शामिल होते हैं जो राजनीतिक व्यवहार, और उसके मूल्यांकन हेतु मूल्यों व उस पर नियंत्रण हेतु तरीकों को स्पष्ट करते हैं।

राजनीतिक सिद्धांत, चिंतन से भिन्न, किसी एक व्यक्ति द्वारा निराधार कल्पना की ओर संकेत है, जो प्रायः व्याख्या के आदर्शों के रूप में संधियों में सुस्पष्ट होते हैं। इसमें संस्थाओं के सिद्धांत आते हैं, जिनमें राज्य के, कानून के, प्रतिनिधित्व के और चुनाव के सिद्धांत शामिल हैं। पूछताछ का तरीका तुलनात्मक और व्याख्यात्मक होता है। राजनीतिक सिद्धांत साधारण राजनीतिक जीवन से जन्म लेने वाली प्रवृत्तियों व कार्रवाइयों को स्पष्ट करने और एक प्रसंग विशेष में उनके विषयक साधारणीकरण करने का प्रयास करता है : यह राजनीतिक सिद्धांत संकल्पनाओं व परिस्थितियों के बीच संबंधों के विषय में अथवा उनसे संबद्ध होता है। राजनीतिक-दर्शन राजनीतिक सिद्धांतों के बीच विवादों को हल करने या समझने का प्रयास करता है, जो कि प्रदत्त प्ररिस्थितियों में समान रूप से स्वीकार्य प्रतीत हो सकते हैं।

राजनीतिक विचारधारा एक ज्ञानकृत और सर्वग्रहणशील सिद्धांत है, जो उसे प्राप्त करने की एक विस्तृत योजना के साथ मानव स्वभाव और समाज का एक सम्पूर्ण और सार्वत्रिक रूप से व्यवहार्य सिद्धांत देने का प्रयास करता है। जॉन लॉक को प्रायः आधुनिक विचारधाराओं का जनक कहा जाता है। मार्क्सवाद भी एक चिंतन संबंधी श्रेष्ठ उदाहरण है, जो कि इस कथन में समेटा जा सकता है कि दर्शनशास्त्र का उद्देश्य है – दुनिया को बदलना न कि सिर्फ़ उसकी व्याख्या करना। समस्त राजनीतिक चिंतन राजनीतिक दर्शन है, तथापि इसका विलोम सत्य नहीं है। बीसवीं सदी में फासीवाद, नाज़ीवाद, साम्यवाद व उदारवाद जैसी अनेक विचारधाराएँ दिखाई दीं। राजनीतिक चिंतन की एक विशिष्ट विशेषता उसकी मतांधता है, जो राजनीतिक-दर्शन से भिन्न, आदर्श समाज को साकार करने संबंधी अपने उद्देश्य के कारण आलोचनात्मक समीक्षा को सूचित और हतोत्साहित करती है। गैमाइन एवं सैबाइन के अनुसार, राजनीतिक चिंतन राजनीतिक सिद्धांत का एक प्रतिवाद है क्योंकि चिंतन हाल ही में जन्मी होती है, और आशावाद के प्रभावाधीन आत्मपरक, असत्यापनीय मूल्य अधिमानों पर आधारित होती है। गैमाइन, इसके अतिरिक्त, एक राजनीतिक सिद्धांती को एक प्रचारवादी से भिन्न मानते हैं; उनके अनुसार जबकि पूर्ववर्ती के पास मुद्दों की एक गूढ़ समझ होती है, परवर्ती तत्काल प्रश्नों से संबद्ध होता है।

इसके अलावा, जर्मीनो भी, प्लैटो की ही भाँति मत और ज्ञान के बीच भेद करते हैं जहाँ परवर्ती राजनीतिक सिद्धांती का आरंभ-बिन्दु होता था। हरेक राजनीतिक सिद्धांती की दोहरी

भूमिका होती थी – एक वैज्ञानिक और दार्शनिक की, और किस तरीके से वह अपनी भूमिकाएँ विभाजित करता है, उसके मिज़ाज और दिलचस्पियों पर निर्भर करेगा। केवल इन दो भूमिकाओं के संयोजन द्वारा ही एक सार्थक तरीके से ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिल सकती है। किसी सिद्धांत का वैज्ञानिक घटक सुसंगत और महत्त्वपूर्ण लग सकता है, यदि लेखक राजनीतिक जीवन के उद्देश्यों की कोई पूर्वकल्पित धारणा रखता हो। दार्शनिक आधार उसी तरीके में प्रकट होता है जिसमें वास्तविकता का वर्णन होता है।

राजनीतिक सिद्धांत तटस्थ और निष्पक्ष होता है। विज्ञान के रूप में, यह जो कुछ भी अव्यक्त अथवा सुव्यक्त रूप से वर्णन किया जा रहा हो, उस पर कोई निर्णय देने का प्रयास किए बग़ैर राजनीतिक बखान करता है। दर्शनशास्त्र के रूप में, आचार-व्यवहार के नियम निर्धारित करता है जो कि समग्र समाज के लिए, न कि महज कुछ व्यक्तियों या वर्गों के लिए उत्तम जीवन सुनिश्चित करेंगे। सिद्धान्ती, सिद्धांत रूप में, स्वयं किसी भी एक देश अथवा वर्ग अथवा दल की राजनीतिक व्यवस्थाओं में कोई व्यक्तिगत रुचि नहीं लेगा। इस प्रकार की दिलचस्पी के अभाव में, वास्तविकता संबंधी उसका दृष्टिकोण और उत्तम जीवन संबंधी उसकी कल्पना धूमिल नहीं होंगे, न ही उसका सिद्धांत कोई विशेष होगा। किसी भी चिंतन का अभिप्राय समाज में सत्ता की एक व्यवस्था विशेष को न्यायसंगत ठहराना होता है। सिद्धांतवादी एक हितबद्ध पक्ष होता है : उसका हित बातों का पक्ष लेने में हो सकता है, चूँकि वह उसकी यथास्थिति की आलोचना करेगा– इस उम्मीद से कि सत्ता का एक नया वितरण अस्तित्व में आयेगा। निष्पक्ष निर्धारण की बजाय हम युक्तिपरकता पसंद करते हैं। तटस्थ विवरण की बजाय हमारे पास वास्तविकता की एक विकृत तस्वीर है।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) राजनीतिक सिद्धांत और अन्य अन्तर्सम्बद्ध शब्दों का अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 राजनीतिक सिद्धांत के अनुप्रयोग

अरस्तू के समय से ही राजनीतिक सिद्धांतवादी राजनीतिक प्रथाओं व उनके अनुप्रयोग को समझने के लिए 'राजनीतिक' को परिभाषित करते रहे हैं। अरस्तू की यह टिप्पणी कि 'मनुष्य एक राजनीतिक प्राणी है', समाज हेतु अन्तर्जात मानवेच्छा की भूमिका ले लेती है और यह तथ्य भी कि मानवमात्र को एक राजनीतिक समुदाय की आवश्यकता होती है और वह उसी के माध्यम से पूर्णता पा सकता है। अरस्तू के अनुसार, 'राजनीतिक' महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसका अर्थ है – एक सार्वजनिक राजनीतिक स्थान जहाँ पर सभी नागरिक जन भाग लेते हैं। तथापि, राजनीति की परिधि सीमित रखनी पड़ती है।

राजनीतिक सिद्धांत का राजनीतिक आयाम स्वयं को राज्य अथवा सरकार के स्वरूप, प्रकृति व संगठन और वैयक्तिक नागरिक के साथ अपने संबंध से जोड़ता है। यद्यपि ये अन्तर्सम्बद्ध हैं, राजनीतिक को एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में बरता जाता है, जो कि अर्थव्यवस्था व संस्कृति जैसे अन्य क्षेत्रों से भिन्न और असमान होता है। उदारवादी परंपरा का यही प्रमुख ध्यान केन्द्र है। दूसरी ओर, मार्क्सवाद यह तर्क देकर कि 'राजनीतिक सत्ता आर्थिक सत्ता की नौकरानी है,' राजनीतिक व ग़ैर-राजनीतिक के बीच उदारवादी विभेद को सुस्पष्टतापूर्वक निरस्त करता है। वह आर्थिक सत्ता व राज्य के बीच संबंध तादात्म्य स्थापित करता है।

3.3.1 राजनीतिक चिंतन के इतिहास स्वरूप

सामान्यतया राजनीतिक सिद्धांत में पाठ्यक्रम पुस्तकों अथवा विशिष्ट राजनीतिक दर्शनों के विस्तृत एवं विशद अध्ययन प्रस्तुत करते हैं जो कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से, प्लैटो से लेकर वर्तमान युग तक होता है। इन पुस्तकों का अध्ययन कुछ खास प्रकार की संस्थाओं, सरकारों व कानूनों की वांछनीयता के विषय में उनके नियामक कथनों के लिए किया जाता है, जो कि प्रायः युक्तिपरक तर्कों के साथ दिए होते हैं। इन कालजयी रचनाओं को गुणवत्ता में शाश्वत, भरोसे में स्थायी और उनके महत्त्व में सार्वभौमिक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से मूल पाठों का विश्लेषण करते समय यह देखना महत्त्वपूर्ण होता है कि समय के साथ कोई विचार अथवा संकल्पना विशेष कैसे क्रमविकसित हुई ; और विभिन्न अर्थ एवं व्याख्याएँ भी जिनके अधीन वह रही हो। जबकि यह जानना ज़रूरी है कि कोई बात पहली बार किसने कही, समान रूप से, किसी विचार अथवा संकल्पना के शाखा विस्तार को जानना भी महत्त्वपूर्ण है। यही कारण है कि वॉलिन राजनीतिक सिद्धांत के इतिहास का वर्णन निरंतरता और नवप्रर्वतन, दोनों द्वारा सूचित मानते हैं।

3.3.2 विश्लेषण की तकनीक स्वरूप

अरस्तू की यह उक्ति कि व्यक्ति एक राजनीतिक प्राणी है, राजनीति की प्राथमिकता और यह तथ्य दर्शाता है कि राजनीतिक चिन्तन विभिन्न स्तरों पर और भिन्न-भिन्न तरीकों से होता है। राजनीतिक इस प्रकार के दृष्टिकोण में न केवल सर्वाकर्षक ही नहीं, बल्कि कार्रवाई का सर्वोच्च प्रकार भी हो जाता है। राजनीति एक सामूहिक जन-जीवन का प्रतीक है, जिसमें लोग ऐसी संस्थाएँ बनाते हैं जो कि उनके आम जीवन को नियमित करती है। यहाँ तक कि भ्रांतिजनक सरल साधारण बुद्धि प्रश्न और राजनीतिक मत भी उत्तर को योग्य बनाते हैं, उदाहरण के लिए, क्या सभी व्यक्ति समान हैं? क्या राज्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण हैं? क्या राज्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है? राज्य द्वारा प्रयुक्त हिंसा को सही कैसे ठहराएँ? स्वतंत्रता और समानता के बीच क्या कोई अन्तर्निहित तनाव है? बहुसंख्यकों के प्रति आदेश जारी किए जाते समय क्या अल्पसंख्यकों को सही ठहराया जाता है और क्या इसका विपरीत भी सही है? इन कथनों के प्रति व्यक्ति की प्रतिक्रिया प्रायः यह प्रकट करती है कि 'मामला क्या होना चाहिए,' न कि 'मामला क्या है'। यहाँ मूल्यों और आदर्शों के बीच विकल्प दाँव पर होता है। अपने अधिमानों का प्रयोग कर व्यक्ति अनजाने में किसी राजनीतिक चिंतन को स्वीकार कर लेता है, जिसका मतलब है कि प्रश्नों के उत्तर न केवल व्यक्तिगत मत के अनुसार विविध होंगे, बल्कि व्यक्ति के मूल्य अधिमानों पर निर्भर करते हुए भी भिन्न होंगे। ऐसा इस बुनियादी कारण से है कि राजनीतिक सिद्धांत को एक मुक्त समाज का हिस्सा बनना है, चूँकि यहाँ हमेशा उदारवादी और रूढ़िवादी जन होंगे, राजनीतिक सिद्धांत में प्रशिक्षण व्यक्ति को उपर्युक्त प्रश्नों का तार्किक रूप से, सैद्धांतिक रूप से और आलोचनात्मक रूप से उत्तर देने में मदद करती है।

3.3.3 संकल्पनात्मक स्पष्टीकरण स्वरूप

राजनीतिक सिद्धांत किसी राजनीतिक बहस और विश्लेषण में प्रयुक्त संकल्पनाओं और शब्दों को समझने में मदद करता है : जैसे स्वतंत्रता, समानता, लोकतंत्र, न्याय व अधिकारों का अर्थ। ये शब्द न सिर्फ़ रोज़ाना की बातचीत में ही, अपितु राजनीतिक सिद्धांत संबंधी बातचीत में भी प्रायिकता से प्रयोग किए जाते हैं। इन शब्दों की समझ इसलिए ज़रूरी है कि इससे उस तरीके का पता चलता है जिसमें ये शब्द प्रयोग किए गए, साथ ही उनकी परिभाषा में बदलाव और किसी तर्क प्राधार में उनका प्रयोग। वैलडन जैसे अनेक विद्वान साधारण पूर्व-सैद्धांतिक भाषा में संकल्पनाओं की सूक्ष्म जाँच किए जाने की आवश्यकता पर ज़ोर देते हैं। संकल्पनाओं के विश्लेषण किसी वक्ता या/और लेखक की वैचारिक प्रतिबद्धता को भी प्रकट करते हैं। उदारवादी जन स्वतंत्रता को अपनी पसंद सूचित करने व अवरोधों के अभाव के रूप में परिभाषित करते हैं, जबकि समाजवादी जन स्वतंत्रता और समानता को पसंद करते हैं। उदारवादी जन राज्य को मानव कल्याण के एक साधन रूप में परिभाषित करते हैं जबकि एक समाजवादी के लिए राज्य दमन, प्रभुत्व और वर्ग विशेषाधिकारों का एक साधन है। संकल्पनात्मक वर्गीकरण निश्चित रूप से संभव है, परन्तु पक्षपातशून्य नहीं हो सकता। वे लोग जो इसमें स्पष्ट रूप से या गुप्त रूप से लगे हैं, मूल्य अधिमानों को स्वीकार करते हैं, और इस अर्थ में उनका काम राजनीतिक सिद्धांत में कालजयी रचनाओं के लेखकों से भिन्न नहीं है जो हमें मानवीय, राजनीतिक एवं नैतिक कार्रवाइयों के अन्तर्निहित आधार को समझने में मदद करते हैं।

3.3.4 औपचारिक आदर्श-निर्माण स्वरूप

यह अवधारणा विशेष रूप से अमेरिका में लोकप्रिय है, क्योंकि यह राजनीतिक सिद्धांत को राजनीतिक प्रक्रियाओं के औपचारिक आदर्शों को सोच निकालने हेतु एक प्रयोग रूप में लेती है; ठीक सैद्धांतिक अर्थशास्त्र में औपचारिक आदर्शों की ही तरह। ये आदर्श दो उद्देश्यों की पूर्ति करते हैं : प्रथम, वे व्याख्यात्मक होते हैं, योजनाबद्ध रूप से उन कारकों को प्रस्तुत करते हुए जिन पर राजनीतिक प्रक्रियाएँ आधारित हैं। दूसरे, वे नियामक होते हैं, उन परिणामों को दर्शाने का प्रयास करते हैं जो किसी नियम विशेष को अपनाने से प्रोद्भूत होते हैं। इस प्रकार के प्रयोग का एक अच्छा उदाहरण है – एन्टोनी डॉन का 'चुनावी-प्रतिस्पर्धा सिद्धांत' जो यह मानकर चलता है कि मतदाता गण चुनाव-परिणाम से अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करते हैं और टीमों के रूप में पार्टियाँ अपनी विजय संभावनाओं को अधिक-से-अधिक बढ़ाने का प्रयास। डॉन फिर बताते हैं कि किस प्रकार पार्टियाँ जीतने के लिए वैचारिक दृष्टिकोणों को सोच निकालती हैं। एक अन्य महत्त्वपूर्ण आदर्श है – कैनेथ ऐरो का असंभावना प्रमेय, जिसके अनुसार, अन्य बातों से परे, जहाँ दो से अधिक विकल्पों के बीच से एक लोकतांत्रिक विकल्प चुना जाना हो, प्रबल संभावना है कि परिणाम यादृच्छिक और विकल्प प्रयोग हेतु अपनाई गई प्रक्रिया द्वारा प्रभावित हो। ज़ोसफ़ शम्पीटर का आभिजात्य सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि मनुष्य राजनीतिक जीवन के बजाय अपने आर्थिक जीवन को अधिक गंभीरता से लेता है।

3.3.5 सैद्धांतिक राजनीति-विज्ञान स्वरूप

बीसवीं सदी में राजनीति-विज्ञान के उद्भव ने कुछ राजनीति-वैज्ञानिकों को प्रवृत्त किया है कि वे राजनीतिक सिद्धांत के इस विषय को महज एक सैद्धांतिक शाखा के रूप में देखें। आनुभाविक अवलोकनों को व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के सांसारिक अनुभवों की एक योजनाबद्ध व्याख्या के साथ जोड़ने के लिए प्रयास किया जाता है। इस दृष्टिकोण को पारंपरिक राजनीतिक सिद्धांत की नियामक विषयवस्तु से अलग रखा जाता है। यद्यपि

राजनीतिक दृश्यघटना की मात्र व्याख्या संभव है, परन्तु इसको अनुभववाद में आधारित करना ही काफी नहीं है। नियामक तत्त्वों से मुक्त किसी राजनीतिक सिद्धांत को प्रतिपादित करने का प्रयास सहज ही असफल रहेगा। ऐसा इस वजह से है कि राजनीतिक घटनाओं की किसी भी व्याख्या का मतलब होगा भागीदारों के निश्चयों एवं प्रेरणाओं की विवृति, और इस प्रकार की विवृति नियामक मुद्दों को सामने लाएगी।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) राजनीतिक सिद्धांत को किन्हीं दो उपयोगों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 मुख्य सैद्धान्तिक संकल्पनाओं का महत्त्व

एक पाठक जो राजनीतिक सिद्धांत से पहली बार परिचित हो रहा हो, दुर्बोध संकल्पनाओं की बजाय संस्थाओं का अध्ययन किया जाना ही पर्याप्त समझ सकता है, ताकि वह समाज के लक्षण और प्रकृति को जान सके। जबकि संस्थाओं का अध्ययन संभव है, हमको स्पष्टतया अनुभव करना पड़ता है कि संस्थागत प्रबंध समाज-समाज में भिन्न-भिन्न होते हैं क्योंकि वे विचारों की विविध शृंखलाओं पर आधारित होते हैं। यह अनुभव हमें विषयवस्तु की गहराई तक ले जाता है कि महत्त्वपूर्ण क्या है – यथार्थता अथवा अवधारणाएँ, तथ्य अथवा संकल्पनाएँ? क्या अवधारणाएँ वास्तविकता दर्शाती हैं? या फिर क्या यथार्थता अवधारणाओं पर आधारित है?

3.5 क्या राजनीतिक सिद्धांत अपना अस्तित्व खो चुका है?

बीसवीं शताब्दी के मध्य में अनेक प्रेक्षकों ने जल्दी से राजनीतिक सिद्धांत की एक निधन सूचना लिख डाली। कुछ ने इसके पतन की बात की तो दूसरों ने इसकी मृत्यु ही घोषित कर दी। एक ने तो राजनीतिक सिद्धांत को, कुत्ताघर में रहता है, तक बता दिया। यह निराशापूर्ण दृष्टिकोण इसलिए है कि राजनीतिक सिद्धांत में सैद्धांतिक परम्परा आमतौर पर आनुभाविक परीक्षण के नियंत्रण से परे मूल्य निर्णयों से लदी हुई है। नियामक सिद्धांत की आलोचना 'तीस के दशक में युक्तियुक्त आशावादियों की ओर से और तदोपरांत व्यवहारवादियों की ओर से आयी। ईस्टन का दावा है कि चूँकि राजनीतिक सिद्धांत किसी प्रकार के ऐतिहासिक स्वरूप से जुड़ा है, यह अपनी रचनात्मक भूमिका भूल चुका था। वह राजनीति सिद्धांत में नाटकीयता के लिए विलियम डनिंग, चार्ल्स एच. मैकल्वेन और जॉर्ज एम. सैबाइन को दोष देते हैं। इस प्रकार के राजनीतिक सिद्धांत ने मूल्य सिद्धांत के एक गंभीर अध्ययन से छात्रों को रोका है।

अपनी भूमिका में सिद्धांत एक ऐसा माध्यम था जिसके द्वारा विशिष्ट और बुद्धिमान व्यक्ति जन अपने विचार मामलों को वास्तविक दिशा में ले जाते थे और घटनाओं की वांछित दिशा विषयक कुछ धारणाओं को गंभीर विचारार्थ प्रस्तुत करते थे। इस प्रकार उन्होंने हमारे सामने अपने नैतिक सिद्धांतों का संपूर्ण अर्थ खोलकर रख दिया। वर्तमान में, तथापि ऐतिहासिक व्याख्या का स्वरूप प्रकार जिससे हम राजनीतिक सिद्धांत के अध्ययन में सुपरिचित हैं, ने परवर्ती से ही अपना अनुपम प्रकार्य व्युत्पन किया है, जो कि एक मूल्यात्मक सिद्धांतों की ओर संरचनात्मक रूप से पहुँचने संबंधी है। अतीत में, सिद्धांत के प्रति दृष्टिकोण एक बुद्धिपरक कार्यकलाप के रूप में है, जिसके द्वारा विद्यार्थी यह जान सकता था कि वह ज्ञातव्य परिणामों, और उनके माध्यम से अपने निजी नैतिक दृष्टिकोण के मूलभूत आध ाारवाक्यों का अन्वेषण किस प्रकार आरम्भ करे। अमेरिकी राजनीति-सिद्धांतियों द्वारा लिखी गई पुस्तकों की सूक्ष्म जाँच दर्शाती है कि उनके लेखकगण अर्थ, अंतः संगतता और विगत राजनीतिक मूल्यों के ऐतिहासिक विकास विषयक फुटकर जानकारी की बजाय ऐसे ज्ञान को संप्रेषित करने में रुचि करने द्वारा कम प्रेरित थे। डनिंग ने *ए हिस्ट्री ऑफ़ पॉलटिकल थिअरी* (1902) नामक अपने तीन खण्डों में राजनीतिक सिद्धांत में अनुसंधान हेतु वातावरण तैयार किया। एक इतिहासकार के रूप में यह प्रशिक्षण उन्हें राजनीतिक सिद्धांत तक प्रमुखतः ऐतिहासिक बदलाव की समस्याओं को रखने के रूप में और इस प्रक्रिया में राजनीतिक धारणाओं की भूमिका को बतलाने के लिए पहुँचने में समर्थ बनाया। परिणामस्वरूप राजनीतिक सिद्धांत, डनिंग के अनुसार, राजनीतिक धारणाओं की शर्तों व परिणामों का एक ऐतिहासिक लेखा-जोखा बन गया। वह एक युग की सांस्कृतिक व राजनीतिक अवधारणाओं पर से परदा उठाने और, बदले में, सामाजिक दशाओं पर इन धारणाओं के प्रभावों को अलग करने का प्रयास करते हैं।

ईस्टन डनिंग को एक ऐतिहासिकतावादी बताते हैं, क्योंकि वह राजनीतिक सिद्धांत को नैतिक विचार से विमुख करते हैं और सचेत रूप से एक विशुद्ध ऐतिहासिक प्रसंग में नैतिक मुद्दों के साथ क्रियाव्यापार से बचाते हैं। डनिंग राजनीतिक सिद्धांत को अनिवार्यतः उन मुद्दों के भीतर ऐतिहासिक अनुसंधान के रूप में लेते हैं जो कि राजनीतिक तथ्यों व प्रथाओं को अपनाने से पैदा होते हैं। वह अपने अध्ययन को राजनीतिक जीवन संबंधी नीतिशास्त्रीय की बजाय कानूनी आयामों तक सीमित रखते हैं, यद्यपि तदोपरांत उनके शिष्यों ने उसे राजनीतिक कार्यकलाप के सिद्धांतों को चारों ओर से घेरने के लिए इसे विस्तार प्रदान किया। वह नैतिक दृष्टिकोणों को बिना औचित्य प्रतिपादन के सनक, हठमत के उत्थान के रूप में लेते हैं और इस प्रकार विश्लेषण अथवा व्याख्या योग्य नहीं हैं। वह धारणाओं के अर्थ और तार्किक संगतता पर ध्यान नहीं देते।

मैक्ल्वेन ने अपनी पुस्तक *द ग्रोथ ऑफ़ पॉलिटिकल थॉट इन द वैस्ट* (1932) में ऐतिहासिक अनुसंधान का प्रयोग किया है क्योंकि वह राजनीतिक धारणाओं का एक 'प्रभाव' के रूप में लेते हैं, न कि सामाजिक कार्यकलाप की किसी प्रभावशाली अन्तर्क्रियात्मक भूमिका के रूप में। वास्तविक जीवन के बदलते प्रतिमानों में यथार्थ शून्यों के रूप में धारणाओं की सार्थकता सिद्धांतों से संबंधित इतिहास की मात्र एक ऐसी भूमिका के रूप में हो सकती है, जिसमें धारणाएँ उत्तरवर्ती धारणाओं के लिए स्थितियाँ अनुकूल बना सकतीं हैं, परंतु उन्हीं में से जिनमें वे कार्रवाई पर कोई प्रभाव नहीं छोड़तीं। राजनीतिक सिद्धांत यहाँ ज्ञानपरक समाजशास्त्र की एक शाखा के रूप में अनुमान किया जाता है, जो कि मुख्य रूप से ज्ञान को रूपायित करती परिस्थितियों के साथ वास्ता रखती हैं क्योंकि वह समय के साथ-साथ बदलता रहता है। राजनीतिक सिद्धांती का काम है वह रास्ता दिखाना जिसमें कोई सामाजिक परिवेश ढलता है और राजनीतिक चिंतन को आकार प्रदान करता है। यह विचारधारा के निर्धारक तत्त्वों को अनावृत्त करने संबंधी अनन्य रूप से आनुभाविक कार्य से जुड़ा होता है।

सैबाइन की पुस्तक *ए हिस्ट्री ऑफ़ पॉलिटिकल थिअरी* (1939) ने 'तीस के दशक में अध्ययनों को विशेष रूप से प्रभावित किया है। डनिंग और मैक्ल्वेन की ही भाँति, सैबाइन भी सिद्धांत के ऐतिहासिक अध्ययन को विषयवस्तु के प्रति एक उचित दृष्टिकोण के रूप में लेते हैं। इस पुस्तक से और उसके तरीके की व्याख्या से हम जो प्रभाव देखते हैं, वो यह है कि सिद्धांत का एक ऐतिहासिक अध्ययन अपनी स्वयंसिद्ध न्यायसंगतता प्रदान करता है। सैबाइन डनिंग और मैक्ल्वेन दोनों के दृष्टिकोणों को जोड़कर चलते हैं। डनिंग की ही भाँति वह भी विश्वास करते हैं कि राजनीतिक चिंतन राजनीतिक प्रक्रिया का एक हिस्सा है, जो अन्तर्क्रिया करता है और सामाजिक कार्रवाई को प्रभावित करता है। वह मैक्ल्वेन के इस मत से सहमत हैं कि प्रत्येक सिद्धांत में नैतिक निर्णय का वर्णन और विश्लेषण ज़रूरी होता है, क्योंकि ये किसी कार्रवाई के महज युक्तिकरण ही नहीं बल्कि इतिहास में निर्णयकारी कारक भी होते हैं। नैतिक निर्णय तथ्यपरक प्रस्थापनाओं के मुकाबले निकृष्ट नहीं होते हैं, जैसे कि डनिंग निश्चयपूर्वक कहते हैं। यद्यपि सैबाइन धारणाओं व कार्रवाई के बीच संबंध विषयक अपनी व्याख्या में डनिंग को दोहराते हैं, वह नीतिशास्त्रीय निर्णय की भूमिका पर अपने ज़ोर दिए जाने द्वारा राजनीतिक सिद्धांत के इतिहास की प्रकृति संबंधी अपनी अवधारणा में भिन्न हैं।

सैबाइन के अनुसार हर राजनीतिक सिद्धांत की सूक्ष्म जाँच दो दृष्टिकोणों से की जा सकती है : सामाजिक दर्शन के रूप में और चिंतन के रूप में। एक विचारधारा के रूप में सिद्धांत मनोवैज्ञानिक दृश्यघटनाएँ हैं, सत्यता अथवा असत्यता को छोड़कर। सिद्धांत विश्वास हैं, लोगों के मन में घटनाएँ हैं, और अपनी वैधता अथवा प्रमाणनीयता पर ध्यान न देते हुए अपने व्यवहार में कारक हैं। सिद्धांत इतिहास में एक प्रभावशाली भूमिका निभाते हैं और इसी कारण एक इतिहासकार का काम होता है – उस सीमा को निर्धारित करना जहाँ तक कि ये सिद्धांत इतिहास को दिशा दे पाने में मदद करते हों। किसी भी सिद्धांत की मानवीय कार्रवाइयों पर उसके प्रभाव की बजाय उसके अर्थ के लिए जाँच की जानी होती है। इस परिप्रेक्ष्य से देखे जाने पर किसी भी सिद्धांत में दो प्रकार की प्रस्थापनाएँ पाई जाती हैं : तथ्यात्मक और नैतिक। सैबाइन नैतिक की बजाय तथ्यात्मक कथनों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, क्योंकि परवर्ती सत्यता अथवा असत्यता की व्याख्या छोड़ देता है। वह मूल्यों का सम्मान 'कुछ सामाजिक एवं भौतिक तथ्य' हेतु मानवीय वरीयताओं को प्रकट करने के रूप में करते हैं। वे न तो तथ्यों से निगम्य हैं, न ही उन्हें तथ्यों में बदला जा सकता है अथवा राष्ट्रीय रूप से मनोभावों की अभिव्यक्तियों के रूप में खोजा जा सकता है। चूँकि राजनीतिक सिद्धांत वरीयता संबंधी कुछ कथन प्रस्तुत करता है, मूल्य निर्णय सिद्धांत के सारभाग केन्द्र का निर्माण करते हैं और उसके अस्तित्व हेतु कारण स्पष्ट करते हैं। नैतिक तत्त्व राजनीतिक सिद्धांत को अभिलक्षित करते हैं, जो कि इस बात का कारण है कि यह मुख्यतः एक नैतिक उद्यम क्यों है। किसी सिद्धांत के भीतर तथ्यात्मक प्रस्थापनाओं के बावज़ूद किसी प्रसंग अथवा काल विशेष का वर्णन करने में राजनीतिक सिद्धांत समग्र रूप से मुश्किल से ही सत्य हो सकता है।

ईस्टन ने आमतौर पर राजनीतिक सिद्धांत के पतन और विशेष रूप से ऐतिहासिकतावाद में उसके पतन हेतु कारणों की जाँच की। प्रथम और सर्वोपरि है – रचनात्मक दृष्टिकोण के अभाव की ओर प्रवृत्त करती उनके युग संबंधी नैतिक प्रस्थापनाओं के अनुरूप राजनीति-वैज्ञानिकों के बीच रुझान। ज़ोर दिया जाता है व्यक्ति के मूल्यों को अनावृत्त करने और सामने लाने पर, जिसका अर्थ है कि इन नैतिक मूल्यों के गुणों के विषय में पूछताछ की अब आवश्यकता नहीं रही है, अपितु उनके 'उद्‌गमों, विकास और सामाजिक प्रभाव' को समझ लेना ही काफ़ी है। इतिहास का प्रयोग वर्तमान मूल्यों का समर्थन करने के लिए किया जाता है। दूसरे, नैतिक सापेक्षतावाद उस ध्यानाकर्षण हेतु जिम्मेदार है, जो इतिहास के साथ किसी सिद्धांत को मिला हो।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) राजनीति सिद्धांत की जाँच किन दो दृष्टिकोणों से की जा सकती है? चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.6 राजनीतिक सिद्धांत का पुनरुत्थान

'तीस के दशक में राजनीतिक सिद्धांत ने साम्यवाद, फासीवाद और नाज़ीवाद के सर्वसत्तात्मक सिद्धांतों के विरोध में उदारवादी लोकतांत्रिक सिद्धांत के बचाव के उद्देश्य से धारणाओं के इतिहास का अध्ययन शुरू कर दिया। लैसवैल ने मानव व्यवहार पर नियंत्रण रखने के संभावित उद्देश्य को लेकर एक वैज्ञानिक राजनीतिक सिद्धांत की स्थापना करने का प्रयास किया, जो कि मरियम द्वारा बताए गए उद्देश्यों एवं मार्ग पर आगे बढ़ना ही था। क्लासिकीय परम्परा से भिन्न, वैज्ञानिक राजनीतिक सिद्धांत का वर्णन करता है न कि निर्धारण। पारंपरिक अर्थ में राजनीतिक सिद्धांत आरेन्ड्ट थियॉडार अडोर्ना, मारक्युस, लिओ स्ट्रौस आदि की रचनाओं में जीवित रहा। उनके दृष्टिकोण अमेरिकी राजनीति विज्ञान के भीतर विस्तृत विचारों से नाटकीय रूप से भिन्न हैं, क्योंकि वे उदारवादी लोकतंत्र, विज्ञान और ऐतिहासिक प्रगति में विश्वास करते थे। वे सभी राजनीति में राजनीतिक मसीहावाद और रामराज्यवाद को अस्वीकार करते हैं। आरेन्ड ने मुख्य रूप से मनुष्य की अनुरूपता और दायित्व पर ध्यान केन्द्रित किया, जिसके साथ ही वह व्यवहारवाद की अपनी आलोचना शुरू कर देती हैं। उन्होंने निश्चयतापूर्वक कहा कि मानव स्वभाव में अनुरूपताओं हेतु व्यावहारिक अनुसंधान ने मनुष्य को केवल रूढ़िबद्ध करने की दिशा में ही योगदान दिया है।

स्ट्रौस ने आधुनिक युग के संकट से उबर हेतु क्लासिकीय राजनीतिक सिद्धांत के महत्त्व को फिर से दोहराया है। वह इस प्रस्थापना से सहमत नहीं हैं कि समस्त राजनीतिक सिद्धांत एक प्रदत्त सामाजिक-आर्थिक हित को प्रतिबिम्बित करता प्रकृति में वैचारिक है, क्योंकि अधिकांश राजनीतिकचिंतक सामाजिक विद्यमानता में सही व्यवस्था के सिद्धांत को जान लेने की संभाव्यता द्वारा ही अभिप्रेरित होते हैं। एक राजनीतिक दार्शनिक को मुख्य तौर पर सत्य में रुचि रखनी चाहिए। विभाजित मान्यताओं का अध्ययन संसक्ति और संगति को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। राजनीतिक सिद्धांत में उत्कृष्ट साहित्य के लेखक अधिक श्रेष्ठ हैं, क्योंकि वे प्रतिभासम्पन्न व्यक्ति होते थे और उन्हें उनकी कृतियों के हिसाब से ही आँका जाना था। स्ट्रौस 'नव' राजनीतिक-विज्ञान के तरीकों और प्रयोजनों पर सूक्ष्म दृष्टि डालते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि क्लासिकीय राजनीतिक सिद्धांत, खासकर अरस्तू के, से तुलना किए जाने पर यह दोषपूर्ण है। अरस्तू के अनुसार, किसी भी राजनीतिक-वैज्ञानिक को निष्पक्ष रहना पड़ता है, क्योंकि उसके पास मानवीय साधनों की एक अधिक व्यापक और स्पष्ट समझ होती है। राजनीतिक-विज्ञान और राजनीतिक-दर्शन तद्रूप हैं, क्योंकि सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं वाला विज्ञान दर्शनशास्त्र के तद्रूप

है। अरस्तू का राजनीतिक-विज्ञान राजनीतिक वस्तुओं का भी मूल्यांकन करता है, व्यावहारिक मामलों में दूरदर्शिता की स्वायत्तता की रक्षा करता है और राजनीतिक कार्रवाई को अनिवार्यतः नीतिशास्त्रीय के रूप में देखता है। इन आधारवाक्यों को व्यवहारवाद अस्वीकार करता है, क्योंकि वह राजनीतिक दर्शन को राजनीतिक-विज्ञान से अलग करता है और उसके स्थान पर सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक विज्ञानों के बीच भेद को रखता है। वह व्यवहारमूलक विज्ञानों से व्युत्पन्न हुआ तो मानता है परन्तु ठीक उसी भाँति नहीं होते जैसे कि क्लासिकीय परम्परा मानती है। आशावाद की भाँति व्यवहारवाद भी अनर्थकारी है, क्योंकि वह परम सिद्धांतों के संबंध में ज्ञान से इनकार करता है। उनका दिवालियापन प्रत्यक्ष है, क्योंकि वे असहाय दिखाई पड़ते हैं जो सर्वसत्तावाद के उदय के चलते सही या गलत अथवा उचित या अनुचित में भी भेद नहीं कर पाते हैं। स्ट्रौस इतिहासवाद संबंधी ईस्टन के दोषारोपण का प्रत्युत्तर देते हुए कहते हैं कि यह नया विज्ञान ही राजनीतिक सिद्धांत में पतन हेतु उत्तरदायी है, क्योंकि उसने नियामक मुद्दों संबंधी अपनी समग्र उपेक्षा की वजह से पश्चिमी देशों के आम राजनीतिक संकट की ओर इशारा किया और उसे दुष्प्रेरित किया।

वोगलिन राजनीतिक-विज्ञान और राजनीतिक सिद्धांत को अविभाज्य और इस प्रकार का बताया कि एक दूसरे के बगैर संभव नहीं है। राजनीतिक-विज्ञान कोई विचारधारा, कल्पना-लोक अथवा वैज्ञानिक कार्यप्रणाली नहीं बल्कि एक प्रयोगात्मक विज्ञान है जो व्यक्ति और समाज दोनों में सही व्यवस्था संबंधी है। इसको व्यवस्था संबंधी समस्या का आलोचनात्मक और आनुभाविक रूप से सूक्ष्म परीक्षण करना पड़ता है।

सिद्धांत समाज में मानव अस्तित्व विषयक कोई मत प्रकटन मात्र नहीं है, अपितु यह अनुभवों के एक निर्णायक वर्ग की विषयवस्तु की व्याख्या द्वारा अस्तित्व के अर्थ को सूत्रबद्ध करने का एक प्रयास है। उसका तर्क यादृच्छिक नहीं है बल्कि वह उन अनुभवों के पूर्णयोग से वैधता व्युत्पन्न करता है, उसे आनुभाविक नियंत्रण हेतु स्थायी रूप से संदर्भ लेना चाहिए।

3.7 ताज़ा घटनाक्रम

'सत्तर के दशक से, व्यापक रूप से हैबरमा, नॉज़िक और रॉल्स के प्रयासों के चलते राजनीतिक सिद्धांत फिर से जीवित हो उठा है। उसके पुनरुत्थान के बाद से प्रमुख रूप से सामने आने वाली विषयवस्तुएँ स्थूलतः सामाजिक न्याय और कल्याणकारी अधिकार हैं जो कि एक सत्ता-निर्मूलक परिप्रेक्ष्य, उपयोगितावाद, लोकतांत्रिक सिद्धांत एवं बहुवाद, नारीवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, नव-सामाजिक साम्यवादी बहस में देखे जाते हैं। वस्तुतः साम्यवाद ने मार्क्सवाद की घटती लोकप्रियता द्वारा छोड़े गए रिक्त स्थान को भरने का प्रयास किया है। तथापि, जीवन की यह अभूतपूर्व पट्टाधृ (lease) जो राजनीतिक सिद्धांत को प्राप्त हुई है, विद्वत्परिषद् (academia) तक ही सीमित है। और परिणामतः यह 'एक प्रकार की विमुख राजनीति है', यथा उन कार्यकलापों से कुछ दूरी पर चलाया जाने वाला उद्यम जिनकी ओर वह संकेत करती हो। यह पुनरुत्थान दर्शाता है कि इनके पतन और/अथवा समाप्ति के विषय में उद्घोषणाएँ अपरिपक्व और शैक्षिक रूप से अदूरदर्शी हैं। तथापि, हमें समकालीन राजनीतिक सिद्धांत की क्लासिकीय परम्परा से भिन्न पहचानने में सावधान रहना पड़ता है, क्योंकि पूर्ववर्ती को प्रेरणा परवर्ती से ही मिलती है और इस अर्थ में वे समकालीन जटिलताओं के प्रति क्लासिकीय परम्परा के व्यापक प्राधारों का समंजित करते, नए होने की बजाय परिष्कृत करने के प्रयास हैं।

यह नया-नया पैदा हुआ जोश उदारवादी राजनीतिक संलाप तक ही सीमित रहा है जिसका कारण मुख्य रूप से है – व्यापक समाज को मज़बूत बनाने की आवश्यकता संबंधी जर्मीनो की इच्छा को पूरा करती रॉल्स की प्रारम्भिक पुस्तक। नवीन उदारवादी सिद्धांत, अपने फिर से लिए गए अर्थ में, निष्पक्षता और औचित्य संबंधी धारणाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है, इस विश्वास के साथ कि 'भेदभाव उचित भिन्नताओं पर आधारित अवश्य होना चाहिए'। यह बात इस तथ्य से मेल नहीं खाती कि न्याय की अवधारणा का एक सुनियोजित और विस्तृत विश्लेषण जो प्लैटो के समय से ही अतिआपेक्षित है, रॉल्स में प्रकट होता है जिसके अनुसार न्याय का मतलब है औचित्य। रॉल्स इस क्लासिकीय परम्परा में इस बात से सरोकार रखते हैं कि क्या होना चाहिए, क्योंकि अधिकारों के वितरण, अवसरों, आय, धन-सम्पत्ति और आत्म-सम्मान के आधार संबंधी विवादग्रस्त समस्या उनके सामने आयी थी। परस्पर होड़ करती विचारधाराओं के बीच जो बीसवीं सदी में केवल उदारवाद को प्रवेश कराती हैं, फासीवाद और साम्यवाद का अस्तर उधेड़ती हैं और विचार के स्वतंत्र विनिमय की अनुमति देती हैं। यह समकालिक होता है, और ज़रूरत पड़ने पर प्रथा के आलोक में सिद्धांत को अनुकूलित कर लेता है तथा उन तत्त्वों की पहचान करता है जो एक न्यायसंगत और सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा बिना अव्यवहारिक और मतान्ध हुए बनता है। तथापि, इस नए उदारवादी सिद्धांत का काफी कुछ पूर्व सैद्धान्तिक स्थितियों को परिष्कृत करने व स्पष्ट करने की प्रकृति में रहा है। इसके अतिरिक्त, फासीवाद और साम्यवाद दोनों द्वारा चुनौती का अभाव, प्रथमतः द्वितीय विश्वयुद्ध में उसकी पराजय के कारण ध्वस्त हो गयी, भी सिद्ध करता है कि कल्पना-लोकी और आमूल परिवर्तनवादी योजनाएँ अब सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक रूप से वांछित और व्यावहार्य विकल्प नहीं रही हैं। तिस पर भी उदारवाद के सामने आज के समय में समाजवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद तथा नारीवाद की ओर से चुनौतियाँ हैं।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) राजनीति सिद्धांत के पुनरुत्थान पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.8 सारांश

प्लैटो के समय से ही राजनीतिक सिद्धांत अपने काल और स्थान से प्रभावित रहा है। अपना खुद का समय भी कोई भिन्न नहीं। गत एक सौ वर्षों के बेहतर भाग में उदारवादी लोकतंत्र, फासीवादी और साम्यबाद के बीच एक तीव्र होड़ रही है। फासीवादी चुनौती अल्पकालिक रही जो द्वितीय विश्वयुद्ध में हार के साथ समाप्त हो गयी, परन्तु साम्यवाद की चुनौती युद्धोपरांत और चार वर्षों तक जारी रही। इस अवधि में आरेन्ड एवं फ्रैड्रिक द्वारा

सर्वसत्तावाद की प्रकृति में नवीन दृष्टियाँ ; बर्लिन, हयेक व पॉवर द्वारा उदारवादी लोकतंत्र का समर्थन तथा जर्मन मार्क्सवाद व सोवियत साम्यवाद के बीच प्लामेन्टा की तुलना आदि दृष्टिगोचर हुए। एविनेरी, बर्लिन, डाल, पॉपर एवं टक्कर द्वारा मार्क्सवाद सिद्धांत एवं व्यवहार की तीखी आलोचनाएँ सुनाई दीं। मिलिबां और ईस्ट यूरोपीय असंतुष्टों ने समाजवादी संलाप के इच्छास्वातंत्र्यवाद पहलू को उजागर किया। द्वितीय विश्वयुद्धोपरांत काल में समाभिरूपता सिद्धांत का उदय और उन्नत पूँजीवाद एवं विकसित समाजवाद के बीच आम लोगों पर ज़ोर देती वैचारिक बहस की समाप्ति देखी गयी। इस प्रकार समकालीन राजनीतिक सिद्धांत व्यवहारतः दुनिया के हर कोने से महत्त्वपूर्ण योगदानों के साथ वैश्विक बन गया। उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद ने राजनीतिक सिद्धांत हेतु ग़ैर-पाश्चात्य जानकारी की एक प्रभावशाली अभिव्यक्ति की ओर प्रवृत्त किया जो कि गाँधी जी के 'हिन्द स्वराज्य' में पाश्चात्य भौतिकवादी सभ्यता की भर्त्सना, परिष्करण, माओ ज़दौंग, अमिक्ला लोप कैबरा, एडवड सैद के लेखों में यूरोपीय-केन्द्रवाद के अस्वीकरण तथा लिओपॉल सैंगर की हब्शी एवं अफ्रीकी पहचान संबंधी संकल्पना में प्रकट हुई।

सर्वाधिक प्रभावशाली योगदान बीसवीं सदी के उदारवादियों द्वारा रहा, जिसका उद्घाटन हॉब्हाउस के उदारवाद द्वारा और उत्कर्ष रॉल्स के मुख्य सिद्धांत में हुआ। उन्होंने पूछताछ के नए रास्ते खोलने की बजाय पहले के विचारों को ही वर्गीकृत और परिष्कृत किया। यह कार्यतः अपरिहार्य विचार अपनाए जा चुके हैं; हेगेल के बाद वे नए देश व नई भिन्नताओं में फिर से दिखाई देते हैं, परन्तु फिर से दिखाई पड़ना आधारभूत नव-परिवर्तन की संभावना हेतु एक कसौटी है। हमारे समय के राजनीतिक सिद्धांत का गत दो हज़ार सालों की समृद्ध सैद्धान्तीकरण परम्परा में पर्यवेक्षण होता रहा है और हमारे राजनीतिक जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलू नियामक सिद्धांत की बजाय व्यवहारमूलक राजनीति विषय नवीन विद्वतापूर्ण पुस्तकों में अधिक पाए जाते हैं। हमारा ज़माना उन ज़मानों से भी भिन्न है जो इससे पूर्व एक बुनियादी ढंग के थे। यह प्रौद्योगिकी का युग है जो माइक्रोचिप क्रांति और आनुषंगिक कार्यतंत्रों में व्यक्त होता है। बाहरी प्रभावों के प्रति राष्ट्र-राज्यों के अधिक प्रवेश्य और ग्रहणक्षम बनने के साथ ही राजनीतिक सिद्धांत की बढ़ती परिव्याप्ति और भूमण्डलीकरण तथा प्रौद्योगिकी की भूमिका का प्रत्युत्तर देना होता है। तथापि, कीन्स का कहना है कि धारणाओं का प्रभाव हमेशा व्यापक होगा और राजनीतिक सिद्धांत की समृद्ध विरासत के ढाँचे के भीतर हमारे समय की जटिलताओं को रखने वाले समकालीन राजनीतिक सिद्धांत का राजनीतिक सिद्धांत के इतिहास में अपना न्यायसंगत स्थान अवश्य ही होगा।

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बैरी, बी., 'द स्ट्रेन्ज डैथ ऑफ़ *पॉलिटीकल* फ़िलोसॅफ़ी', *डैमॉक्रेसी, पॉवर और जस्टिस : एस्सेज़ इन पॉलिटीकल थिअरी* में, क्लेरैन्डन प्रैस, ऑक्सफोर्ड, 1989।

बर्लिन, सर आई., 'डज़ *पॉलिटीकल* थिअरी स्टिल एक्ज़िस्ट?', पी. लैस्लेट एवं डब्ल्यू.जी. रन्सीमैन कृत *फ़िलासॅफ़ी, पॉलिटिक्स एण्ड सोसाइटि*, द्वितीय शृंखला (सं.) में, ब्लैकवैल, ऑक्सफोर्ड, 1964।

मार्श, डी. एवं जी. स्टोकर, *थिअरी एण्ड मैथड इन पॉलिटीकल थिअरी : ट्रैडीशन एण्ड डाइवर्सिटी,* कैम्ब्रिज यूनिवसिर्टी प्रैस, कैम्ब्रिज, 1997।

विन्सें, *पॉलिटीकल थिअरी : ट्रैडीशन एण्ड डाइवर्सिटि*, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैम्ब्रिज, 1997।